

سَرَحِيمٌ ١٣) اِنْبَاءَ اَمْوَالِكُمْ وَاَوْلَادِكُمْ فَتَنَةٌ وَّ اللهُ عِنْدَآ اَجْرٌ

मेहरबान है तुम्हारे माल और तुम्हारे बच्चे जांच ही हैं²⁴ और **अल्लाह** के पास बड़ा

عَظِيمٌ ١٥) فَاتَّقُوا اللهَ مَا اسْتَطَعْتُمْ وَاَسْعَوْا وَاَطِيعُوا وَاَنْفِقُوا

सवाब है²⁵ तो **अल्लाह** से डरो जहां तक हो सके²⁶ और फ़रमान सुनो और हुकम मानो²⁷ और **अल्लाह** की राह में खर्च करो

خَيْرًا لِاَنْفُسِكُمْ وَمَنْ يُؤَقْ شَخَّ نَفْسِهِ فَاُولَئِكَ هُمُ الْبٰفِلِحُونَ ١٦)

अपने भले को और जो अपनी जान की लालच से बचाया गया²⁸ तो वोही फ़लाह पाने वाले हैं

اِنْ تَقْرَضُوا اللهَ قَرْضًا حَسَنًا يُّضَعْفُهٗ لَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ وَا اللهُ

अगर तुम **अल्लाह** को अच्छा कर्ज़ दोगे²⁹ वोह तुम्हारे लिये उस के दूने कर देगा और तुम्हें बख़्शा देगा और **अल्लाह**

شَكُورٌ حَلِيمٌ ١٧) عِلْمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةُ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ١٨)

कद्र फ़रमाने वाला हिल्म वाला है हर निहां और इयां का जानने वाला इज्जत वाला हिकमत वाला

﴿ اِيَاتِهَا ١٢ ﴾ ﴿ سُورَةُ الطَّلَاقِ مَدِيْنَةٌ ٩٩ ﴾ ﴿ رُكُوعَاتِهَا ٢ ﴾

सूरए त़लाक़ मदनिय्या है, इस में बारह आयतें और दो रूकूअ हैं

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला¹

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ اِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَاءَ فَطَلِّقُوهُنَّ لِعَدَّتِهِنَّ وَاَحْصُوا

ऐ नबी² जब तुम लोग औरतों को त़लाक़ दो तो उन की इहत के वक़्त पर उन्हें त़लाक़ दो और इहत

الْعَدَّةَ وَاَتَّقُوا اللهَ رَبَّكُمْ لَا تُخْرِجُوهُنَّ مِنْ بِيُوْتِهِنَّ وَاَلَا يَخْرُجْنَ

का शुमार रखो³ और अपने रब **अल्लाह** से डरो इहत में उन्हें उन के घरों से न निकालो और न वोह आप निकलें⁴

फ़कीह हो गए हैं, येह देख कर उन्होंने ने अपनी बीबी बच्चों को सज़ा देने का इरादा किया और येह क़स्द किया कि उन का खर्च बन्द कर दें क्यूं कि वोही लोग उन्हें हिजरत से मानेअ हुए थे जिस का येह नतीजा हुवा कि हुज़ूर के साथ हिजरत करने वाले अस्थाब इल्म व फ़िक्ह में उन से मन्ज़िलों आगे निकल गए, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और उन्हें अपने बीबी बच्चों से दर गुज़र करने और मुआफ़ करने की तरगीब फ़रमाई गई, चुनान्चे आगे इशार्द फ़रमाया जाता है : 24 : कि कभी आदमी इन की वजह से गुनाह और मा'सियत में मुब्तला हो जाता है और इन में मशगूल हो कर उमूरे आख़िरत के सर अन्जाम से गाफ़िल हो जाता है । 25 : तो लिहाज़ रखो ऐसा न हो कि अम्वाल व औलाद में मशगूल हो कर सवाबे अज़ीम खो बैठो । 26 : या'नी ब क़द्रे अपनी वुस्तूत व ताक़त के ताअत व इबादत बजा लाओ येह तफ़सीर है "اتَّقُوا اللهَ حَتَّى تَقَاتِبَهُ" की 27 : **अल्लाह** त़ाला और उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ का 28 : और उस ने अपने माल को इत्मीनान के साथ हुकमे शरीअत के मुताबिक़ खर्च किया 29 : या'नी खुशदिली से नेक निय्यती के साथ माले हलाल से सदका दोगे, सदका देने को बराहे लुत्फ़ों करम कर्ज़ से ता'बीर फ़रमाया, इस में सदके की तरगीब है कि सदका देने वाला नुक़सान में नहीं है बिल यकीन इस की जज़ा पाएगा । 1 : सूरए त़लाक़ मदनिय्या है, इस में दो 2 रूकूअ, बारह 12 आयतें और दो सो उन्नास 249 कलिमे और

إِلَّا أَنْ يَأْتِيَنَّ بِفَاحِشَةٍ مُّبَيَّنَةٍ ۖ وَتِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ ۖ وَمَنْ يَتَعَدَّ

मगर यह कि कोई सरीह बे हयाई की बात लाएँ⁵ और यह **अल्लाह** की हदें हैं और जो **अल्लाह** की हदों

حُدُودَ اللَّهِ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهُ ۖ لَا تَدْرِي لَعَلَّ اللَّهَ يُحْدِثُ بَعْدَ

से आगे बड़ा बेशक उस ने अपनी जान पर जुल्म किया तुम्हें नहीं मा'लूम शायद **अल्लाह** इस के बा'द कोई

ذَلِكَ أَمْرًا ۝ فَإِذَا بَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ فَأَمْسِكُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ أَوْ

नया हुक्म भजे⁶ तो जब वोह अपनी मीआद तक पहुंचने को हों⁷ तो उन्हें भलाई के साथ रोक लो या

فَارِقُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ وَأَشْهُدُوا ذُوَى عَدْلِ مِّنْكُمْ وَاقْبِلُوا الشَّهَادَةَ

भलाई के साथ जुदा कर दो⁸ और अपने में दो सिकह को गवाह कर लो और **अल्लाह** के लिये गवाही

بِاللَّهِ ۖ ذَلِكُمْ يُوعَظُ بِهِ مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ۗ وَمَنْ

काइम करो⁹ इस से नसीहत फरमाई जाती है उसे जो **अल्लाह** और पिछले दिन पर ईमान रखता हो¹⁰ और जो

एक हजार साठ 1060 हर्फ हैं। 2 : अपनी उम्मत से फरमा दीजिये 3 शाने नुजूल : यह आयत अब्दुल्लाह बिन उमर رضي الله تعالى عنه के हक में नाजिल हुई, उन्होंने ने अपनी बीबी को औरतों के अय्यामे मख़ूसाम में तलाक़ दी थी। सय्यिदे आलम صلى الله تعالى عليه وسلم ने उन्हें हुक्म दिया कि रज्ज़त करें, फिर अगर तलाक़ देना चाहें तो तुह्र या'नी पाकी के ज़माने में तलाक़ दें, इस आयत में औरतों से मुराद मदखूल बिहा औरतें हैं (जो अपने शोहरों के पास गई हों) सगीरा, हामिला और आइसा न हों (आइसा वोह औरत है जिस के अय्याम बुदापे की वजह से बन्द हो गए हों उन का वक़्त न रहा हो) **मस्अला** : ग़ैर मदखूल बिहा पर इद्दत नहीं है बाकी तीनों किस्म की औरतों जो जि़क़ की गई थीं उन्हें अय्याम नहीं होते तो उन की इद्दत हैज़ से शुमार न होगी। **मस्अला** : ग़ैर मदखूल बिहा को हैज़ में तलाक़ देना जाइज़ है। आयत में जो हुक्म दिया गया इस से मुराद ऐसी मदखूल बिहा औरतें हैं जिन की इद्दत हैज़ से शुमार की जाए उन्हें तलाक़ देना हो तो ऐसे तुह्र में तलाक़ दें जिस में उन से जिमाअ न किया गया हो, फिर इद्दत गुज़रने तक उन से तअर्रज़ न करें इस को तलाक़े अहसन कहते हैं, तलाक़े हसन ग़ैर मौतूअह औरत या'नी जिस से शोहर ने कुरबत न की हो उस को एक तलाक़ देना तलाक़े हसन है ख़ाह येह तलाक़ हैज़ में हो और मौतूअह औरत अगर साहिबे हैज़ हो तो उसे तीन तलाक़ें ऐसे तीन तुह्रों में देना जिन में उस से कुरबत न की हो तलाक़े हसन है और अगर मौतूअह साहिबे हैज़ न हो तो उस को तीन तलाक़ें तीन महीनों में देना तलाक़े हसन है, तलाक़े बिद्ई हालते हैज़ में तलाक़ देना या ऐसे तुह्र में तलाक़ देना जिस में कुरबत की गई हो तलाक़े बिद्ई है, ऐसे ही एक तुह्र में तीन या दो तलाक़ें यकबारगी या दो मरतबा में देना तलाक़े बिद्ई है अगरचें इस तुह्र में वती न की गई हो। **मस्अला** : तलाक़े बिद्ई मकरूह है मगर वाक़ेअ हो जाती है और ऐसी तलाक़े देने वाला गुनहगार होता है। 4 **मस्अला** : औरत को इद्दत शोहर के घर पूरी करनी लाजिम है, न शोहर को जाइज़ कि मुतल्लका को इद्दत में घर से निकाले, न उन औरतों को वहां से खुद निकलना रवा 5 : उन से कोई फिरके जाहिर सादिर हो जिस पर हद आती है मिस्त जि़ना और चोरी के इस के लिये उन्हें निकालना ही होगा। **मस्अला** : अगर औरत फ़ोहूश बके और घर वालों को ईज़ा दे तो उस को निकालना जाइज़ है क्यूं कि वोह नाशिज़ा (ना फरमान) के हुक्म में है। **मस्अला** : जो औरत तलाक़े रज्ज़ या बाइन की इद्दत में हो उस को घर से निकलना बिल्कुल जाइज़ नहीं और जो मौत की इद्दत में हो वोह हाज़त पड़े तो दिन में निकल सकती है लेकिन शब गुज़ारना उस को शोहर के घर ही में ज़रूरी है। **मस्अला** : जो औरत तलाक़े बाइन की इद्दत में हो उस के और शोहर के दरमियान पर्दा ज़रूरी है और जि़यादा बेहतर येह है कि कोई और औरत उन दोनों के दरमियान हाइल हो। **मस्अला** : अगर शोहर फ़ासिक हो या मकान बहुत तंग हो तो शोहर को उस मकान से चला जाना बेहतर है। 6 : रज्ज़त का 7 : या'नी इद्दत आख़िर (ख़रम) होने के करीब हो 8 : या'नी तुम्हें इख़्तियार है अगर तुम उन के साथ ब हुस्ने मुआशरत व मुराफ़क़त रहना चाहो तो रज्ज़त कर लो और दिल में फिर दोबारा तलाक़े देने का इरादा न रखो और अगर तुम्हें उन के साथ ख़ुबी से बसर कर सकने की उम्मीद न हो तो महर वग़ैरा उन के हक़ अदा कर के उन से जुदाई कर लो और उन्हें ज़र न पहुंचाओ इस तरह कि आख़िर इद्दत में रज्ज़त कर लो फिर तलाक़े दो और इस तरह उन्हें उन की इद्दत दराज़ कर के परेशानी में डालो ऐसा न करो और ख़ाह रज्ज़त करो या फ़ुक़त इख़्तियार करो दोनों सूरतों में दफ़्प तोहमत और रफ़्प निज़ाअ के लिये दो मुसल्मानों को गवाह कर लेना मुस्तहब है, चुनान्चे इशाद होता है : 9 : मक़सूद इस से उस की रिज़ाजूई हो और इक़ामते हक़ व ता'मीले हुक्मे इलाही के सिवा अपनी कोई फ़ासिद गरज़ इस में न हो। 10 **मस्अला** : इस से इस्तदलाल किया जाता है कि

يَتَّقِ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا ٢ وَيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ ط

अल्लाह से डरे¹¹ अल्लाह उस के लिये नजात की राह निकाल देगा¹² और उसे वहां से रोज़ी देगा जहां उस का गुमान न हो

وَمَنْ يَتَّوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ فَهُوَ حَسْبُهُ ط إِنَّ اللَّهَ بِأَمْرِهِ ط قَدْ جَعَلَ

और जो अल्लाह पर भरोसा करे तो वोह उसे काफ़ी है¹³ बेशक अल्लाह अपना काम पूरा करने वाला है बेशक अल्लाह ने

اللَّهُ لِكُلِّ شَيْءٍ قَدْرًا ٣ وَاللَّيُّ يَسِّنَ مِنَ الْمَحِيضِ مِنْ نِسَائِكُمْ إِنْ

हर चीज़ का एक अन्दाज़ा रखा है और तुम्हारी औरतों में जिन्हें हैज़ की उम्मीद न रही¹⁴ अगर

أَرْتَبْتُمْ فَعِدَّتُهُنَّ ثَلَاثَةُ أَشْهُرٍ وَاللَّيُّ لَمْ يَحْضَنْ ط وَأُولَاتُ الْأَحْصَالِ

तुम्हें कुछ शक हो¹⁵ तो उन की इद्दत तीन महीने है और उन की जिन्हें अभी हैज़ न आया¹⁶ और हम्ल वालियों

أَجَلُهُنَّ أَنْ يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ط وَمَنْ يَتَّقِ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مِنْ أَمْرِهِ

की मीआद यह है कि वोह अपना हम्ल जन लें¹⁷ और जो अल्लाह से डरे अल्लाह उस के काम में आसानी

يُسْرًا ٣ ذَلِكَ أَمْرُ اللَّهِ أَنْزَلَهُ إِلَيْكُمْ ط وَمَنْ يَتَّقِ اللَّهَ يَكْفُرْ عَنْهُ

फ़रमा देगा येह¹⁸ अल्लाह का हुक्म है कि उस ने तुम्हारी तरफ़ उतारा और जो अल्लाह से डरे¹⁹ अल्लाह उस की बुराइयां

سَيِّئَاتِهِ وَيُعْظِمُ لَهُ أَجْرًا ٥ أَسْكِنُوهُنَّ مِنْ حَيْثُ سَكَنْتُمْ مِّنْ

उतार देगा और उसे बड़ा सवाब देगा औरतों को वहां रखो जहां खुद रहते हो अपनी

कुपफ़र शराएअ व अहकाम के साथ मुखातब नहीं । 11 : और तलाक़ दे तो तलाक़े सुन्नी दे और मो'तद्द (इद्दत वाली) को ज़रूर न पहुंचाए न उसे मस्कन (घर) से निकाले और हस्बे हुक्मे इलाही मुसल्मानों को गवाह कर ले । 12 : जिस से वोह दुनिया व आखिरत के ग़मों से ख़लास पाए और हर तंगी और परेशानी से महफूज़ रहे, सय्यिदे आलम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ से मरवी है कि जो शख्स इस आयत को पढ़े अल्लाह तआला उस के लिये शुबुहाते दुनिया गुमराते मौत व शदाइदे रोज़े कियामत से ख़लास की राह निकालेगा और इस आयत की निस्बत सय्यिदे आलम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ने येह भी फ़रमाया कि मेरे इल्म में एक ऐसी आयत है जिसे लोग महफूज़ कर लें तो उन की हर ज़रूरत व हाज़त के लिये काफ़ी है । शाने नुज़ूल : औफ़ बिन मालिक के फ़रज़न्द को मुशिरकीन ने कैद कर लिया तो औफ़ नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ की ख़िदमत में हाज़िर हुए और उन्होंने येह भी अज़ किया कि मेरा बेटा मुशिरकीन ने कैद कर लिया है और इसी के साथ अपनी मोहताज़ी व नादारी की शिकायत की, सय्यिदे आलम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला का डर रखो और सब्र करो और कसरत से "لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيمِ" पढ़ते रहो, औफ़ ने घर आ कर अपनी बीबी से येह कहा और दोनों ने पढ़ना शुरू किया, वोह पढ़ ही रहे थे कि बेटे ने दरवाज़ा खटखटाया, दुश्मन गाफ़िल हो गया था उस ने मौक़अ पाया कैद से निकल भागा और चलते हुए चार हज़ार बकरियां भी दुश्मन की साथ ले आया औफ़ ने ख़िदमते अक्दस में हाज़िर हो कर दरयाफ़्त किया कि क्या येह बकरियां इन के लिये हलाल हैं ? हुज़ूर ने इजाज़त दी और येह आयत नाज़िल हुई । 13 : दोनों ज़हान में । 14 : बूढ़ी हो जाने की वजह से कि वोह सिने अयास को पहुंच गई हों । सिने अयास एक कौल में पचपन और एक कौल में साठ साल की उम्र है और असहूह येह है कि जिस उम्र में भी हैज़ मुक़तअ हो जाए वोही सिने अयास है । 15 : इस में कि उन का हुक्म क्या है । शाने नुज़ूल : सहाबा ने रसूल करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ से अज़ किया कि हैज़ वाली औरतों की इद्दत तो हमें मा'लूम हो गई जो हैज़ वाली न हों उन की इद्दत क्या है, इस पर येह आयत नाज़िल हुई । 16 : या'नी वोह सगीरा हैं या उम्र तो बुलूग़ की आ गई मगर अभी हैज़ न शुरूअ हुवा उन की इद्दत भी तीन माह है । 17 मस्अला : हामिला औरतों की इद्दत वज़ए हम्ल है ख़वाह वोह इद्दत तलाक़ की हो या वफ़ात की । 18 : अहकाम जो मज़कूर हुए 19 : और अल्लाह तआला के नाज़िल फ़रमाए हुए अहकाम

وُجْدِكُمْ وَلَا تَضَارُّوهُنَّ لِتَضَيَّقُوا عَلَيْهِنَّ ٥ وَإِنْ كُنَّ أُولَاتٍ

ताकत भर²⁰ और उन्हें ज़रूर न दो कि उन पर तंगी करो²¹ और अगर²² हम्ल वालियां

حَمِلٌ فَأَنْفِقُوا عَلَيْهِنَّ حَتَّى يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ٦ فَإِنْ أَرْضَعْنَ لَكُمْ

हों तो उन्हें नान नफ़का दो यहां तक कि उन के बच्चा पैदा हो²³ फिर अगर वोह तुम्हारे लिये बच्चे को दूध पिलाएँ

فَاتُوهُنَّ أَجُورَهُنَّ ٧ وَأْتِمِرُوا بَيْنَكُمْ بِمَعْرُوفٍ ٨ وَإِنْ تَعَاَسَرْتُم

तो उन्हें इस की उजरत दो²⁴ और आपस में मा'कूल तौर पर मश्वरा करो²⁵ फिर अगर बाहम मुजायका करो (दुश्वार समझो)²⁶

فَسَتُرَضَعُ لَهَا أُخْرَى ٩ لِيُنْفِقَ ذُو سَعَةٍ مِّنْ سَعَتِهِ ٥ وَمَنْ قُدِرَ

तो करीब है कि उसे और दूध पिलाने वाली मिल जाएगी मक़दूर वाला²⁷ अपने मक़दूर के क़ाबिल नफ़का दे और जिस पर

عَلَيْهِ رِزْقُهُ فَلْيُنْفِقْ مِمَّا آتَاهُ اللَّهُ ٥ لَا يُكَلِّفُ اللَّهُ نَفْسًا إِلَّا مَا

उस का रिज़क़ तंग किया गया वोह उस में से नफ़का दे जो उसे **اللّٰهُ** ने दिया **اللّٰهُ** किसी जान पर बोझ नहीं रखता मगर उसी क़ाबिल

أَتَاهَا ٥ سَيَجْعَلُ اللَّهُ بَعْدَ عُسْرٍ يُسْرًا ٦ وَكَأَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ عَتَتْ

जितना उसे दिया है करीब है कि **اللّٰهُ** दुश्वारी के बा'द आसानी फ़रमा देगा²⁸ और कितने ही शहर थे जिन्होंने अपने रब के

عَنْ أَمْرِ رَبِّهَا وَرُسُلِهِ فَحَاسَبُنَهَا حِسَابًا شَدِيدًا ٧ وَعَدُّ بِهَا عَذَابًا

हुक़म और उस के रसूलों से सरकशी की तो हम ने उन से सख़्त हिसाब लिया²⁹ और उन्हें बुरी

نَكْرًا ٨ فَذَاقَتْ وَبَالَ أَمْرِهَا وَكَانَ عَاقِبَةُ أَمْرِهَا خُسْرًا ٩ أَعَدَّ

मार दी³⁰ तो उन्होंने ने अपने किये का वबाल चखा और उन के काम का अन्जाम घाटा हुवा **اللّٰهُ** ने

पर अमल करे और अपने ऊपर जो हुकूक़ वाजिब हैं उन्हें ब एह्तियात अदा करे **20 मसअला** : तलाक़ दी हुई औरत को ता इद्दत रहने के लिये अपने हस्बे हैसियत मकान देना शोहर पर वाजिब है और इस ज़माने में नफ़का देना भी वाजिब है। **21** : जगह में उन के मकान को घेर कर या किसी ना मुवाफ़िक़ को उन के शरीके मस्कन कर के या और कोई ऐसी ईज़ा दे कर कि वोह निकलने पर मजबूर हों। **22** : वोह मुतल्लकात **23** : क्यूं कि उन की इद्दत जब ही तमाम होगी। **मसअला** : नफ़का जैसा हामिला को देना वाजिब है ऐसी ही ग़ैरे हामिला को भी, ख़्वाह उस को तलाके रज़्द दी हो या बाइन। **24 मसअला** : बच्चे को दूध पिलाना मां पर वाजिब नहीं बाप के ज़िम्मे है कि उजरत दे कर दूध पिलवाए लेकिन अगर बच्चा मां के सिवा किसी और औरत का दूध न पिये या बाप फ़कीर हो इस हालत में मां पर दूध पिलाना वाजिब हो जाता है, बच्चे की मां जब तक उस के बाप के निकाह में हो या तलाके रज़्द की इद्दत में ऐसी हालत में उस को दूध पिलाने की उजरत लेना जाइज़ नहीं बा'दे इद्दत जाइज़ है। **मसअला** : किसी औरत को मुअय्यन उजरत पर दूध पिलाने के लिये मुक़र्र करना जाइज़ है। **मसअला** : ग़ैर औरत की ब निस्वत उजरत पर दूध पिलाने की मां ज़ियादा मुस्तहिक़ है। **मसअला** : अगर मां ज़ियादा उजरत त़लब करे तो फिर ग़ैर ज़ियादा औला। **मसअला** : दूध पिलाई पर बच्चे को नहलाना उस के कपड़े धोना उस के तेल लगाना उस की ख़ूरक़ का इन्तिज़ाम रखना लाजिम् है लेकिन इन सब चीज़ों की क़ीमत उस के वालिद पर है। **मसअला** : अगर दूध पिलाई ने बच्चे को बजाए अपने बकरी का दूध पिलाया या खाने पर रखा तो वोह उजरत की मुस्तहिक़ नहीं। **25** : न मर्द औरत के हक़ में कोताही करे न औरत मुआमले में सख़्ती। **26** : मसलन मां ग़ैर औरत के बराबर उजरत पर राज़ी न हो और बाप ज़ियादा देना न चाहे **27** : मुतल्लका औरतों को और दूध पिलाने वाली औरतों को **28** : या'नी तंगिये मआश के बा'द। **29** : इस से हिसाबे आख़िरत मुराद है जिस का वुकूअ

اللَّهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا ۚ فَاتَّقُوا اللَّهَ يَا أُولِيَ الْأَلْبَابِ الَّذِينَ آمَنُوا ۗ

उन के लिये सख्त अज़ाब तय्यार कर रखा है तो **अल्लाह** से डरो ऐ अक्ल वालो वोह जो ईमान लाए हो

قَدْ أَنْزَلَ اللَّهُ إِلَيْكُمْ ذِكْرًا ۚ رَسُولًا يَتْلُوا عَلَيْكُمْ آيَاتِ اللَّهِ

बेशक **अल्लाह** ने तुम्हारे लिये इज़्जत उतारी है वोह रसूल³¹ कि तुम पर **अल्लाह** की रोशन आयतें

مُبَيَّنَاتٍ لِّيُخْرِجَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى

पढ़ता है ताकि उन्हें जो ईमान लाए और अच्छे काम किये³² अंधेरियों से³³ उजाले की तरफ

النُّورِ ۗ وَمَنْ يُؤْمِنْ بِاللَّهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ

ले जाए और जो **अल्लाह** पर ईमान लाए और अच्छा काम करे वोह उसे बागों में ले जाएगा

تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۗ قَدْ أَحْسَنَ اللَّهُ لَهُ رِزْقًا ۝ ۙ اللَّهُ

जिन के नीचे नहरें बहें जिन में हमेशा हमेशा रहें बेशक **अल्लाह** ने उस के लिये अच्छी रोज़ी रखी³⁴ **अल्लाह** है

الَّذِي خَلَقَ سَبْعَ سَمَاوَاتٍ وَمِنَ الْأَرْضِ مِثْلَهُنَّ يَتَنَزَّلُ الْأَمْرُ

जिस ने सात आस्मान बनाए³⁵ और उन्ही के बराबर ज़मीनें³⁶ हुक्म इन के दरमियान उतरता

بَيْنَهُنَّ لِتَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۗ وَأَنَّ اللَّهَ قَدْ أَحَاطَ

हे³⁷ ताकि तुम जान लो कि **अल्लाह** सब कुछ कर सकता है और **अल्लाह** का इल्म

بِكُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا ۝ ۙ

हर चीज़ को मुहीत है

﴿ ١٢ آياتها ﴾ ﴿ ٢٦ سُورَةُ التَّحْتِمْ مَدَنِيَّةٌ ﴾ ﴿ ٢ رُكُوعَاتُهَا ﴾

सूरए तहरीम मदनिय्या है, इस में बारह आयतें और दो रूकूअ हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला¹

यकीनी है इस लिये सीगए माज़ी से इस की ता'बीर फ़रमाई गई। 30 : अज़ाबे जहन्नम की या दुन्या में क़हत व क़ल्ल वगैरा बलाओं में मुब्तला कर के 31 : या'नी वोह इज़्जत रसूले करीम मुहम्मद मुस्तफ़ा عَلَيْهِ سَلَامٌ हैं 32 : कुफ़्र व जहल की 33 : ईमान व इल्म के 34 : जन्त जिस की ने'मतें हमेशा बाकी रहेंगी कभी मुन्क़तअ न होंगी। 35 : एक के ऊपर एक हर एक की मोटाई पांच सो बरस की राह और हर एक का दूसरे से फ़ासिला पांच सो बरस की राह। 36 : या'नी सात ही ज़मीनें। 37 : या'नी **अल्लाह** तआला का हुक्म इन सब में जारी व नाफ़िज़